E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में, भारतीय ज्ञान परम्परा और महिला शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ सरिता कुशवाह
महाराजा मानसिंह कॉलेज,
चार शहर का नाका
हजीरा, ग्वालियर

Paper Received date
05/01/2026
Paper Publishing Date
10/01/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.18955355

सारांश

शिक्षा मानव विकास का मूल आधार है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक समाज में नारी शिक्षा केवल साक्षरता तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मनिर्भरता, निर्णय क्षमता, तकनीकी दक्षता और सामाजिक नेतृत्व से जुड़ी हुई है। आज वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और सूचना प्रौद्यौगिकी के युग में महिलाओं के लिये शिक्षा के नये अवसर खुले हैं, परंतु सामाजिक मानसिकता और संरचनात्मक असमानताऐं अब भी बाधा उत्पन्न करती है।

महिला शिक्षा आज के समय में सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास और राष्ट्रीय उन्नति का प्रमुख आधार बन चुकी है। किसी भी समाज की प्रगति तभी संभव है, जब उसके दोनों अंग–पुरुष और महिला–समान रुप से शिक्षित और जागरुक हों। वर्तमान युग में महिला शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और समानता स्थापित करने का प्रभावी माध्यम है।

शिक्षित महिला परिवार की प्रथम शिक्षिका होती है। वह अपने बच्चों को नैतिक मूल्यों, स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा के प्रति जागरुक बनाती है। इससे अगली पीढ़ी अधिक सुसंस्कृत और जिम्मेदारी बनती है। महिला शिक्षा के प्रसार से बाल विवाह, दहेज प्रथा, लैंगिक भेदभाव और कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों में कमी आती है।

आर्थिक दृष्टि से भी महिला शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षित महिलाएँ रोजगार प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनती है, जिससे परिवार की आय में वृद्धि होती है और गरीबी कम करने में सहायता मिलती है। वे उद्यमिता, प्रशासन, विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इससे देश की उत्पादन क्षमता और आर्थिक विकास दर में वृद्धि होती है। राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर भी महिला शिक्षा की प्रासंगिकता स्पष्ट है। शिक्षित महिलाएँ अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरुक होती हैं तथा लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी निभाती है। पंचायत से लेकर संसद तक महिलाओं की बढ़ती भागीदारी शिक्षा के प्रभाव का परिणाम है।

सरकार ने महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ लागू की हैं, जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। इन प्रयासों से बालिकाओं के नामांकन और साक्षरता दर में वृद्धि हुई है।

डिजिटल युग में महिला शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। तकनीकी ज्ञान और डिजिटल साक्षरता के बिना आज के प्रतिस्पर्धी समाज में आगे बढ़ना कठिन है। इसलिए महिलाओं को आधुनिक शिक्षा और कौशल विकास से जोड़ना आवश्यक है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अतः स्पष्ट है कि महिला शिक्षा वर्तमान समय में सामाजिक समानता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। शिक्षित महिला न केवल अपने जीवन को सशक्त बनाती है, बल्कि पूरे समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा में महिलाओं की शिक्षा का एक समृद्ध और गौरवशाली इतिहास रहा है। जहाँ वैदिक काल में स्त्रियों को पुरुषों के समान उपनयन संस्कार और विद्याध्यन का अधिकार प्राप्त था। वैदिक काल में अनेक विदुशी महिलाऐं जैसे– गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, घोशा, लोपामुद्रा आदि ने वेदों और दर्शन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
यद्यपि मध्यकाल और उत्तरवैदिक काल तक आते–आते इनकी शिक्षा में कमी आती गई, लेकिन भारतीय ज्ञान परम्परा में नारी सदैव सम्मान और ज्ञान का केन्द्र बनी रही।

आधुनिक परिपेक्ष्य में नारीशिक्षा केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नही, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास लोकतांत्रिक सशक्तिकरण का आधार बन चुकी है। भारत के शिक्षा के अधिकार, नई शिक्षा नीति 2020, डिजिटल क्रांति और महिला सशक्तिकरण अभियानों ने नारी शिक्षा को नई दिशा दी है। फिर भी लैंगिक असमानता, ग्रामीण–शहरी विभाजन, सामाजिक रूढ़ियों और आर्थिक बाधाऐं आज भी चुनौतियाँ बनी हुईं हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा यह मानती है कि एक महिला की शिक्षा न केवल एक व्यक्ति की, बल्कि पूरे परिवार और पीढ़ियों की शिक्षा है, जिससे एक समृद्धषाली राष्ट्र का निर्माण होता है।

शोध के उद्देश्य

इस शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा का विष्लेशण करना।
- यह जाँचना कि भारतीय ज्ञान परम्परा महिला सशक्तिकरण के लिये किस प्रकार सहायक हो सकती है।
- प्राचीन ज्ञान परम्परा और समकालीन महिला शिक्षा के बीच संबंध स्थापित करना।
- महिला शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की संभावनाओं एवं चुनौतियों की पहचान करना।
- भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित शिक्षा के माध्यम से महिला शिक्षा को सुदृढ़ करने का सुझाव देना।

शोध पद्धति

यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का है, क्योंकि इसमें नीति दस्तावेज़ों और साहित्य का विश्लेषण किया गया है। इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितियक दोनों श्रोतों से डेटा लिया गया है। जैसे– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मूल दस्तावेज़, सरकारी रिपोर्ट, शोधपत्र, पुस्तकें, जर्नल लेख, अधिकारिक वेबसाइट एवं विश्वविद्यालयों के शोध–प्रबंध आदि।
इस शोध में गुणात्मक एवं तुलनात्मक विश्लेषण विधियों के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है, कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परम्परा को महिला शिक्षा के साथ किस प्रकार एकीकृत करती है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आधुनिक परिपेक्ष्य में नारी शिक्षा

- **साक्षरता दर** – राष्ट्रीय स्तर पर महिला साक्षरता दर में निरंतर वृद्धि हुई है, किन्तु पुरुषों की तुलना में अब भी अंतर मौजूद है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अपेक्षाकृत अब भी कमज़ोर है।
- **उच्चशिक्षा में भागीदारी** – आज महिलाऐं चिकित्सा, इंजीनियरिंग, प्रशासन, विज्ञान एवं शोध जैसे क्षेत्रों में आगे बढ़ रहीं हैं। विष्वविद्यालयों में छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है, परंतु ैज्म्ड (विज्ञान, तकनीकि, इंजीनियरिंग, गणित) में उनकी भागीदारी अभी भी सीमित ही है।
- **डिजिटल शिक्षा** – ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफार्म और डिजिटल संसाधनों ने महिलाओं को घर बैठे शिक्षा का अवसर प्रदान किया है, परंतु डिजिटल विभाजन (Digital Devide), ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों की महिलाओं के लिये चुनौती है।

नारी शिक्षा के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

- सामाजिक रूढ़ियाँ और पितृसत्तात्मक सोच
- बाल विवाह और घरेलू दायित्व
- आर्थिक असमानता
- सुरक्षा और विद्यालय तक पहुँच की समस्या
- डिजिटल संसाधनों की कमी

सरकारी पहल और नीतियाँ

- **NEP 2020** . राष्ट्रीय शिक्षा नीति में लैंगिक समानता को विषेश महत्व दिया गया है तथा Gender inclusion निदक की व्यवस्था की गई है।
- **Right of Children to Free and Compulsory Education ACT** . 6 से 14 वर्ष के बच्चों के लिये निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा सुनिश्चित करता है।
- **बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ** – इस योजना का उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या रोकना और बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहन देना है।

नारी शिक्षा का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव –

- **आर्थिक आत्मनिर्भरता**– शिक्षित महिलाऐं रोजगार प्राप्त कर परिवार की आय में वृद्धि करतीं हैं।
- **स्वास्थ्य एवं पोशण में सुधार**– शिक्षित माता अपने बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा पर अधिक ध्यान देती है।
- **जनसंख्या नियंत्रण**– शिक्षा के कारण विवाह और मातृत्व की आयु में वृद्धि होती है।
- **राजनीतिक सहभागिता**– शिक्षित महिलाऐं लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भूमिका निभातीं हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का संभावित प्रभाव (Impact Analysis) .

यदि नीति का प्रभावी क्रियान्वयन होता है, तो संभावित प्रभाव–

- **सकारात्मक प्रभाव –**
  - महिला साक्षरता दर में वृद्धि
  - स्कूल छोड़ने की दर में कमी
  - उच्च शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी
  - लैंगिक समानता को बढ़ावा
  - महिला रोजगार में वृद्धि
  - जनसंख्या स्वास्थ्य सूचकांकों में सुधार
- **दीर्घकालिक प्रभाव –**
  - समावेशी समाज का निर्माण
  - मानव संसाधन गुणवत्ता में सुधार
  - सतत् विकास लक्ष्य (SDG5) की प्राप्ति में सहयोग

शिक्षा महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षित नौकरी, व्यवसाय या अन्य आर्थिक गतिविधियों में भाग लेकर अपनी आय अर्जित कर सकतीं हैं। इससे वह परिवार और समाज में अधिक सम्मान और स्वतंत्रता प्राप्त करती हैं।

शिक्षित महिला अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति भी जागरुक होती हैं।

निष्कर्ष

आधुनिक परिपेक्ष्य में नारी शिक्षा सामाजिक परिवर्तन की धुरी है। यदि महिलाओं को गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध करायी जाऐ तो राष्ट्र का समग्र विकास संभव है। शिक्षा के माध्यम से ही लैंगिक समानता, सामाजिक न्याय और आर्थिक प्रगति को साकार किया जा सकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 महिला शिक्षा के क्षेत्र में एक परिवर्तनकारी दस्तावेज़ सिद्ध हो सकती है। यह नीति केवल नामांकन बढ़ाने तक सीमित नही है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण, समावेशी और सशक्तकारी शिक्षा की परिकल्पना प्रस्तुत करती है। वर्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता अत्यधिक है, क्योंकि महिला शिक्षा ही सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और लैंगिक समानता की आधारशिला है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हालांकि नीति की सफलता उसके प्रभावी क्रियान्वयन, संसाधनों की उपलब्धता और सामाजिक मानसिकता में परिवर्तन पर निर्भर करेगी। यदि इन पहलुओं पर गंभीरता से कार्य किया जाए तो भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में यह मील का पत्थर सिद्ध होगा।

सुझाव एवं समाधान

- पाठ्यक्रमों और शिक्षण प्रक्रिया में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाली सामग्री जोड़ी जाए।
- बालिकाओं के लिए डिजिटल साक्षरता और ऑनलाइन शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित की जाए।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु नियमित मूल्यांकन तंत्र विकसित किया जाए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालयों की संख्या और गुणवत्ता में सुधार।
- डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का संचालन।
- छात्रवृत्ति एवं आर्थिक सहायता योजनाओं का विस्तार।
- विद्यालयों में सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, रामनाथ (2018), भारतीय शिक्षा का इतिहास, मेरठ, विनोद पुस्तक मन्दिर।
2. तिवारी, शिवकुमार (2019), भारतीय ज्ञान प्रणाली और शिक्षा, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. शर्मा, कुसुम (2016), महिला सशक्तिकरण और शिक्षा, जयपुर।
4. शिक्षा मंत्रालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार।